हारना मेरेलिए मंजूर नही...

~~ज़िंद~~ जीवन यात्रा में हारना नही मुझे...

'क्यों पिताजी ? नियती हमारे साथ ऐसा खेल क्यो खेल रहा है ? आपके बिना, आपके बिना हम नही जी सकेंगे पिताजी।' मीरा के गले से जब ~~इन शब्द वाक्यो~~ इस कथन बाहर आई तब नंद सिंह को ऐसे लगा जैसे उसके वाक्यों ~~हजार~~ को उसकी आँखों से बहती आँसु लिपट रहा है। अपने बेटी को ऐसी दुर्दशा में ऐसे रोते हुए देखने से नंद के मन और तन टूटने लगा। परन्तु उस कैदी बाप, उस कैदी बाप कुछ नही कर सकता था।

'आपने क्या गलती की पिताजी ? उन पापियों ने आपको इस मुकदमे में फँसा दिया था न ? आपके साथ बडा छल करके आपको ऐसी हालत में छोड दिया उन्होंने। और अब... अब निर्दोष होकर भी, ~~उन पापियो~~ ~~के~~ आपको मृत्यु दंड की सजा मिला.... उन पापियो के स्थान

पर ' मीरा के मुह से उतरी एक-एक वाक्य
में समाज केलिए उसकी नफरत प्रकट थी।
उसकी आँखें क्रोध और पीडा से भरा था।
' मेरी जान बडे-बडे लोग है न वह उसके
पास सब कुछ है, पर, हमारे पास क्या?
मैं तो सिर्फ एक तुच्छ सा नौकर था न उनका,
उन्होने ऐसा सोचा होगा की मेरा जीवन भी
तुच्छ होगा इसलिए आज, इस कैद में उनके जगह
मैं पडी हूँ बिटिया।' नंद ने एक पल केलिए
रोककर सोचा फिर कहा ' मीरा मैं जानता हूँ
मेरे बिना जीवन सरल नहीं होगा लेकिन वादा
दो मुझे मीरा, कि तुम ज़रूर कानुन सीखकर
~~एक अच्छी पु~~ 'मेरे जैसे अभागीयों को दुर्दशा से
बचाने केलिए प्रयास करोगी और जो लोग आज
हमारा तिरस्कार किया है, वह तुम्हे इज़्ज़त
और सम्मान देगा और तुम्हे पुलीस मैडम पुकारेगा।'
नंद के सुखे आँखें तब आशा से चमक रहे
थे।

' कैसे पिताजी, आपने ही कहा था न?
~~क~~ कि हमारे पास कुछ नहीं है, पैसा, '

Item Code: 952 Participant Code: 038

सम्मान आपका प्यार सब कुछ ~~हमसे~~ हमारे परिवार के हाथों से एक के बाद एक करके निकल रहा है। आपने हमारे घर का जीव था आपके बिना परिवार टूट जाएगा। पिताजी, मैंने अपने जीवन मे सब कुछ खो दिया आप, मेरा पति और मेरी सारी खुशियाँ। अब ~~सीख~~ कुछ सीखना नही चाहती है मेरा मन, बल्कि जीने का भी इच्छा नही।' उस अब मीरा के वाक्यों मे हताशा का ध्वनी थी। 'बेटी'- नंद ने उसे दिलासा देने केलिए अपने मुँह जब खोला तब एक कठोर शब्द ने उसे मना किया। 'ओय समय खतम हुआ है, जल्दी निकल।' उस पुलीस पहरेदार के वाक्यों में प्यार या दया का अंशमात्र भी नही था। मरने के पहले एक आखिरी बार एक बाप अपने बेटी को देख रहा था उससे बात कर रहा था लेकिन उस साहब ने उसे ऐसा कुछ और समय रखने का अनुमति नही दिया। मीरा ने अपनी बाप के चेहरे को एक अंतिम बार देखी, वह कुछ नही कह रही थी, बस

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

उस सन्नाटा ही एक लंबी बातचीत लग रहा था। एक बाप और बेटी के बीच भावों की अभिव्यक्ति केलिए ~~बस~~ ही एक नजर भी पर्याप्त था।

मीरा ने कैद के बाहर आई। ~~अ~~ उस घोर अंधकार मे उसे ऐसा लगा कि ~~वह~~ उसकी जीवन को भी अंधकार ने निगल लिया है। उस सर्दी में वह काँप रही थी, लेकिन घर जाने का इच्छा तक नहीं था। वहाँ उसकी माँ अपने पति अवश्य लौटेगा इस उम्मीद के साथ अब भी बैठ रही होगी। क्या उत्तर होगी उसे? अपने भूखी माँ को खाना या मन की शांती दोनो नहीं दे सकती है उस अभागी पुत्री, मां के कैद जाने के खबर सुनकर जब मीरा की पती ने उसकी उपेक्षा किया तबसे वह अपनी माँ के साथ अपने घर रहती है। लोगों के वाक्यों ~~एक~~ ~~उ~~ अनेक अस्त्रों से के तरह उन दोनों औरतों के हृदय को ~~पीडा और~~ खयाल करते थे, उसके मन को कुचल देते थे।

लेकिन उस समय में भी, वह माँ और बेटी को डारने का मंज़ूर नही थी। वह भीषण गरीबी मे और पीडा में भी नंद को बचाने के उम्मीद मे, उसके नंद के ओर की प्यार के बल में लडा लेकिन सब विफल हो गया। कल नंद के साथ ही उनके जीवन मे जो था रोशनी का कण बचा था, वह भी चल जाएगा। नंद ने कैद में पडने के बाद जब-जब भी मीरा को देखा तब कहता था बेटी, पुलीस बन जाओ, और कानुन का सच्ची पहरेदार बनो, बस यही था उसकी अंतीम इच्छा।

'कैसी बेटी हूँ मैं? अपनी माँ और बाप दोनो की इच्छा सफल नही होगा मुझसे, उन्हे अपने पीडा से भी नही बच सकती हूँ मैं समाज के आँखो में भी मुझे कोई मुल्य नही।' उसने रोकर रोशा कहा पर कोई नही था वहाँ उसे दिलाशा देने केलिए। उसने एक क्षण सोचकर अपने आँसु अपनी लाल, मुलायम चेहरे से

पीछे लिया। 'नहीं जीना है मुझे यह जीवन।'
ऐसा कहकर वह समुद्र के ओर की मार्ग पर
चलने लगी। चाँद की रोशनी में ~~नहाल~~ नहले
समुद्र की जल उस दिन शांत नहीं थी जैसे
समुद्र ~~को यह जानत~~ भी मीरा की पीडा
जानती थी। समुद्र के किनारे का धूल मीरा
को मना कर रहा था, लेकिन मीरा ने बडी
मुश्किल से एक-एक कदम ~~क~~ करके आगे
बडी ... अपनी मृत्यु के ओर।
'दीदी एक क्षण रोकिए,
देखो न मेरे पास बहुत ~~मीठ~~ ~~स्वा~~ मीठा और
रंग-बिरंगी मिठाई है कुछ खरीदो न?'
एक मधुर सी स्वर सुनकर मीरा पीछे मुडकर
देखा। एक छोटा सा लडकी वह हस रहा था,
और उसकी हँसी आसमान में हँसी पडी चाँद को
भी परास्त करनेवाली थी उसके आँखों में
आकाश में झिलमिलाते तारों जैसी चमक थी,
लेकिन उसका चेहरा एक मुरझाया हुआ फूल
जैसा था, सुंदर और दुर्बल।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം ..... കമ്മിറ്റി

Item Code: 952 Participant Code: 038

'बच्ची इतनी ~~र~~ रात में तु यहाँ क्या कर रही है' हो? ~~कल~~ रात में समुद्र के किनारे में ऐसा घुमना अच्छी बात नहीं बहुत असुरक्षित है यह जगह बेटी।' मीरा ने हैरान होकर कहा। 'मेरी घर वहीं है दीदी!' उस लड़की ने ~~ऐ~~ वहाँ की एक छोटी सी झोंपडी की ओर इशारा किया। 'मैंने आपको देखकर, मिठाई लेकर यहाँ आई मैं माँ को भी नहीं बताई, यह खरीदलो न इसकी पैसा से मेरी छोटे भाई ठीक होगा दीदी।' बच्ची ने मीरा से ~~अर्थन~~ ~~अपेक्षा~~ याचना किया।

'अच्छा, बैठो यहाँ बेटी।'

मीरा ने उस धूल में ~~बिठ~~ बैठ लिया और उसके साथ-साथ उस बच्ची भी। 'कहो, क्या हुआ है तेरे भाई को।' बच्ची ने ~~हर व~~ सर पे हाथ रखकर सोच लिया, और कहा 'नहीं जान्ती, बस वह बीमार है और हमारे पास उसकी इलाज करने का पैसा नहीं। सुबह भर हम यहाँ घूम लिया पर किसीने मिठाई नहीं खरीदा। ~~सब~~ सभी लोग हमें

Item Code: 952 Participant Code: 038

देखते ही चल दूर जाकर चलते हैं।
माँ भी रो रही थी, कल अस्पताल मे
भाई के डॉक्टर साहब को देने केलिए हमारे पास
पैसा तक नही। इसलिए मैंने आपको देखकर यहाँ
आई पैसा नही मिला तो... भाई भी बापा के साथ
नरक मर गया तो... नही, आप खरीद लीजिए न।'
अब उस लड़की के स्वर में बस दीनता थी।
'हाँ, हाँ दीन दे दो मुझे' - मीरा ने कहा और
उसके पास जो पैसा थी, वह दे दिया उसे
लड़की को। हाथ मे रखा गया पैसा को
देखकर वह बारह साल की लड़की खुश हुई।
'धन्यवाद दीदी' - ऐसा कहकर उसने अपने
~~प~~ हाथ के एक ~~किताब~~ किताब के पन्नों के
बीच पैसा रख दिया।

'अरे तु किताब ~~पढ़~~
पढ़ना पसंद करती हो? कैसी किताब है यह
क्या है इसमें?' मीरा ने पुछा। 'दीदी इसमें
हमारे शरीर के बारे में लिखा गया है, बहुत
सारी चित्र भी है देखो।' लड़की ने बड़ी
उत्सुकता से कहने लगी। 'मैं यह पढ़कर

बड़ी डॉक्टर बनेगी। मेरी बाप जैसे लोगों की इलाज करेगी। किसीको मरने नहीं दूँगी मैं।'
मीरा ने चकित ~~हो~~ ~~है~~ हुई उस लड़की के बातें सुनकर।
'अरे खुशी यहाँ क्यों हो? रात में बाहर जाने को किसने कहाँ?' उसकी माँ ने उसकी तलाश में थी। वहाँ आई। उस दुर्बल-बदन सी औरत ने ~~खुशी~~ मीरा को कहा 'बड़ी ~~न~~ नटखट है मुझे न बताकर यहाँ आई, आपको कोई परेशान दिया तो माफ दीजिए।'
'नहीं, यह मुझे बहुत पसंद आई बड़ी डॉक्टर बनेगी यह भविष्य में,' मीरा ने कहा।
'धन्यवाद जी,' उस माँ और बेटी ने आगे बढ़ने लगा। 'सुनिए इतने मुश्किल और दुर्दशा होने के बाद भी आप लोगों में इतना उम्मीद कैसे?'
मीरा यह पूछने से अपने आप को रोक नहीं सकी। उस औरत ने पीछे मुड़कर अपने होंठ पे एक ~~ह~~ मुस्कान ~~बनकर~~ रखकर कहा 'मेडम जी, इसके पीता ने मरने के ~~पु~~ पहले हमारी खुशी को यह किताब देकर

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

ऐसा कहा कि 'बेटी आज तेरे बाप ऐसा मरने के तरह ~~कोई न को~~ किसी को मरना नहीं वादा दो, कि तु जरूर एक डॉक्टर बनेगी'। मेरी बेटी ने उसे जो वादा दिया है वह ही हमारा उम्मीद है मेरा जीवन का रोशनी। उसे ~~ह~~ सपने को टूटना नहीं दूंगी मैं, इस झोंपडी आज या कल गिरेगा लेकिन हमारा इच्छा और मन के बल कभी नहीं नष्ट होगा। हमें हारने का मंज़ूर नहीं ~~है~~ है माडम जी।' ऐसा कहकर उस औरत ने अपनी बेटी के हाथ पकड़के आगे बढी।

नफरत पीडा हताशा, दुख और दुख से भरी शब्दों को सुनकर भारी ~~हु~~ हुई म थी मीरा के मन। आज ~~र~~ उस गरीब औरत के वाक्यों, निश्चय जो उम्मीद से भरी थी, वह सुनकर मीरा को ऐसा लगा जैसे उसे नई ताकत मिली है, जीने और जीवन यात्रा में उसने केलिए।'

'एक छोटी सी, भोले-भाली लड़की यदि अपने मन के बल पर इतना

विश्वास कर सकती हो, तो, मैं ~~क्यु~~ क्यो नही ? ' मीरा अपने आप को पुछा और अपने मशक से एक कानुन का किताब निकाल दिया जो उसने कई साल पहले ही ~~बंद किया~~ पढना बंद किया था।

उसने जब उस किताब के बीच पन्नों की पुन: सफर किया तब उसके मन मे एक ~~8~~ शक्त भाव ~~उत्पन्न~~ जाग उठी। पैसा और स्थान के कमी से अनेक लोग आज भी नीति से वंचित है उसकी पिता के तरह उन सबको बचना ही मेरे अपने पिता को देनेवाली सबसे बडी इनाम होगी। समाज के घृणा का शिकार बनने का नही बस समाज को सुधारने का है उसका जीवन, यह मीरा को जब समझ गयी, तब वहाँ की पेडों भी हवाँ में ऐसे नाच रहीं थीं, जैसे वह भी खुश हुई है। मीरा ने आगे बढने लगी, समुद्र की नही नई जीवन की और। ~~उसने अपने ऐसे होठरते~~

' जीवन के ~~पर~~ इस यात्रा में हारने का मंजूर नही है मुझे ' ऐसा

Item Code: 952 Participant Code: 038

बार - बार ~~दुह~~ दोहराकर ~~वह~~ आगे ~~बढ़~~ बढ़ी... इस बार उसके मुँह से उतरी एक-एक शब्द में से प्रतीक्षा छलक रहे थे। हाँ, उस दिन एक मीरा ने ~~उ~~ उस समुद्र में ~~अपने जान ले~~ ~~ि~~ डूब गई थी एक मीरा ने अपने जान ले लिया था। उसके साथ - साथ एक दूसरी मीरा का जन्म भी हुआ। जो मीरा ~~स~~ समुद्र के गहराईयों में गई उसे जीने का मंजूर नहीं थी, और जिस नई मीरा का जन्म हुआ उसे जीवन ~~यद~~ यात्रा में हारने का मंजूर नहीं थी। बस अपने जीवन के साथ-साथ अनेकों के जीवन को "अंधकार रूपी राक्षस के पैरों के नीचे से बचने का आशा थी। इस समाज से अनीती मिटाने का शक्त इच्छा थी।"